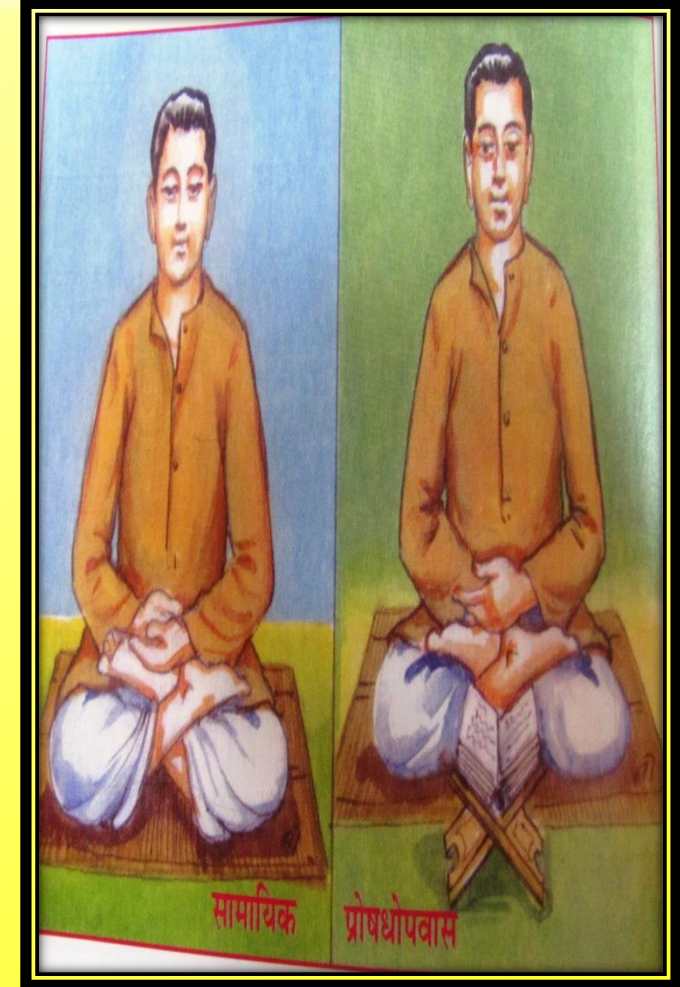


# सामायिक, प्रोषध, भोगोपभोगपरिमाण और अतिथिसंविभागव्रत

Presentation Created By  
श्रीमती सारिका विकास छाबड़ा

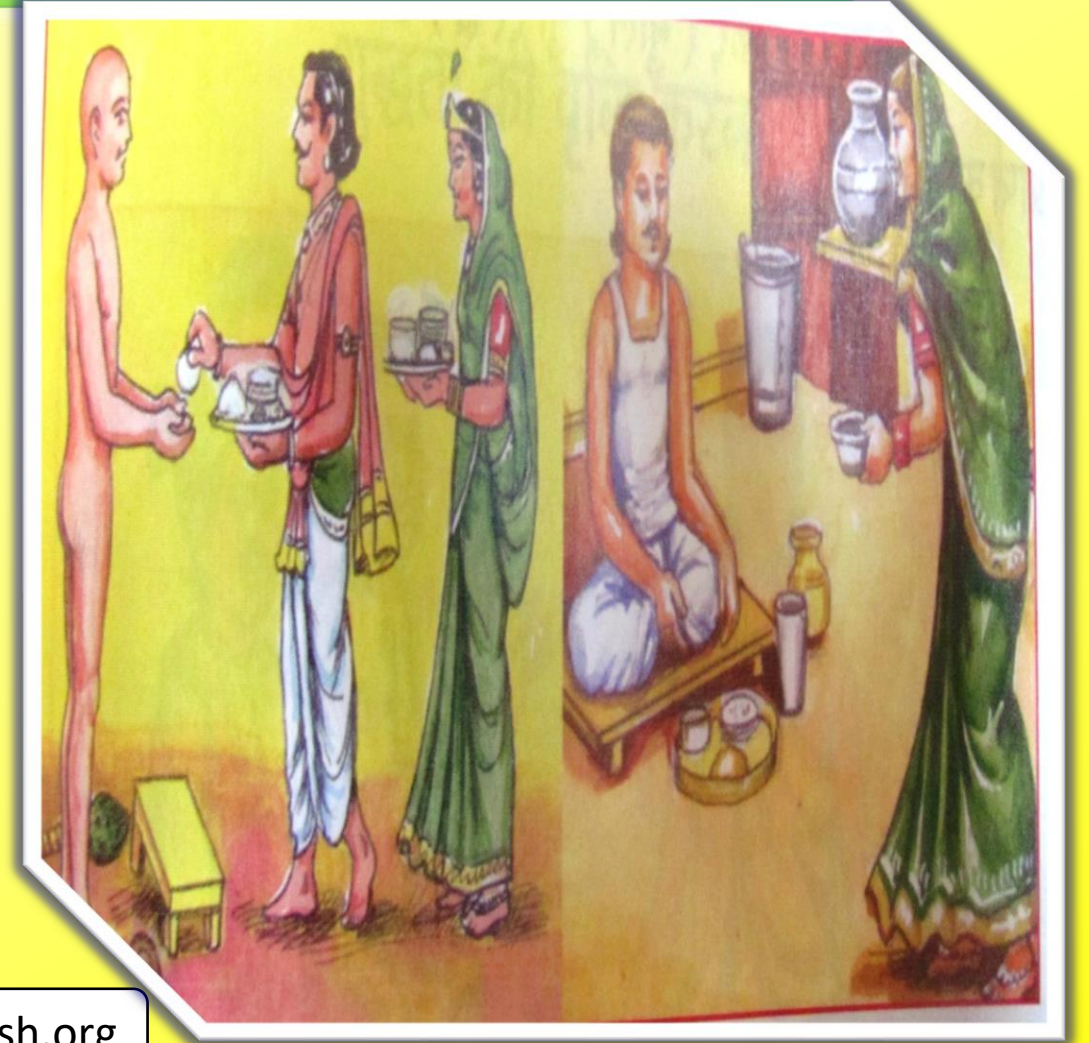
धर उर समताभाव, सदा सामायिक करिये ।  
परव चतुष्टयमाहिं, पाप तज प्रोषध धरिये ॥  
भोग और उपभोग, नियमकरि ममत निवारै ।  
मुनि को भोजन देय फेर, निज करहि अहारै ॥१४॥

- »उर= मन में
- »समताभाव= निर्विकल्पता अर्थात् शल्य के अभाव को
- »धर= धारण करके
- »सदा= हमेशा
- »सामायिक= सामायिक
- »परव चतुष्टयमाहिं= चार पर्व के दिनों में
- »पाप= पापकार्यों को छोड़कर
- »प्रोषधो= प्रोषधोपवास
- »धरिये= करना



# भोग और उपभोग , नियमकरि ममत निवारै। मुनि को भोजन देय फेर, निज करहि अहारै॥१४॥

- »भोग= एकबार भोगा जा सके  
ऐसी वस्तुओं का तथा
- »उपभोग= बारम्बार भोगा जा  
सके ऐसी वस्तुओं का
- »नियमकरि= परिमाण करके -  
मर्यादा रखकर
- »ममत= मोह
- »निवारै= छोड़ दे
- »मुनि को= वीतरागी मुनि को
- »फेर= फिर
- »निज अहारै= स्वयं भोजन करे



# शिक्षाव्रत

✿ गृहस्थपने से मुनिपने की शिक्षा का अभ्यास कराते हैं

सामायिक

भोगोपभोग  
परिमाण

प्रोषधोपवास

अतिथि  
संविभाग

धर उर समताभाव, सदा सामायिक करिये ।

स्वोन्मुखता द्वारा अपने परिणामों को  
स्थिर करके  
प्रतिदिन विधिपूर्वक सामायिक करना,  
सो सामायिक शिक्षाव्रत है

# सामायिक

सं + आयः

सं= एकत्वपने से

आयः = आगमन

परद्रव्यों से निवृत्ति होकर उपयोग की आत्मा में प्रवृत्ति 'यह मैं ज्ञाता दृष्टा हूँ' ऐसा आत्मा में उपयोग वह सामायिक है

# सामायिक

सम+ आयः

सम= राग द्वेष रहित मध्यस्थ आत्मा

आयः= उसमें उपयोग की प्रवृत्ति

समाय है प्रयोजन जिसका

उसे सामायिक कहते हैं

# सामायिक

- ✿ मर्यादा के बाहर व भीतर के क्षेत्र में
- ✿ कुछ काल के लिये समस्त पापों का त्याग
- ✿ सम्पूर्ण द्रव्यों में राग - द्वेष के त्यागपूर्वक आत्म भावना की प्राप्ति करना



# सामायिक के लिये उपयोगी

योग्य क्षेत्र

मंदिर, वन, बाग, घर, एकांत में, न ज्यादा शीत, न उष्ण, दंशमसक रहित

योग्य काल

संधि काल - रात का अंत, दिन का अंत, अन्य कोई भी काल । निषेध - भूकंपादि

योग्य आसन

पद्मासन, अर्द्धासन, सुखासन, खण्डागसन ।  
केश, वस्त्र, अंग बांधकर

# सामायिक के लिये उपयोगी

मन शुद्धि

खोटे विचार नहीं करना चाहिये

वचन शुद्धि

पाठ भूलना नहीं, अशुद्ध नहीं बोलना, इशारे नहीं करना

काय शुद्धि

वस्त्र, आसन, शौच की अपवित्रता न हों

भाव शुद्धि

शुद्ध या शुभ भाव होवे

# क्या त्यागें ?

❁ बैर

❁ कषाय

❁ पाप

❁ शरीर से ममत्व

# क्या करें ?

- ✿ प्रतिक्रमण (भूतकाल में लगे दोषो का निंदा)
- ✿ प्रत्याख्यान (भविष्य के दोषो का त्याग)
- ✿ आलोचना (वर्तमान के)
  - ✿ मौनपूर्वक
  - ✿ परीषह सहें

# सामायिक के प्रकार

निश्चय सामायिक

जितनी शुद्धता

व्यवहार सामायिक

शुभ भाव

# सामायिक का काल

जघन्य

२ घड़ी

मध्यम

४ घड़ी

उत्कृष्ट

६ घड़ी

२ घड़ी = १ मुहूर्त

१ मुहूर्त = ४८ मिनिट

# सामायिक के काल में क्या करें

- ❁ आत्म तत्त्व की प्राप्ति का पुरुषार्थ
  - ❁ तत्त्व विचार, निर्णय,
  - ❁ पढे हुए विषय का चिंतन
  - ❁ बिना देखे पाठ, स्तुति, १२ भावना, वैराग्य भावना बोलना
    - ❁ देखकर बोलना
- ❁ गुपचुप एकांत में स्वाध्याय करना

# सामायिक की शुरुआत में

- ❁ पूर्व दिशा में
- ❁ नमस्कार
- ❁ एक कायोत्सर्ग
- ❁ तीन आवर्त
- ❁ एक शिरोनति करें



परव चतुष्टयमाहिं, पाप तज प्रोषध धरिये ॥

प्रत्येक अष्टमी तथा चतुर्दशी के दिन  
कषाय और व्यापारादि कार्यों को छोड़कर  
धर्मध्यानपूर्वक  
प्रोषधसहित उपवास करना,  
सो प्रोषधोपवास शिक्षाव्रत कहलाता है

# प्रोषधोपवास

❁ पर्व (अष्टमी व चतुर्दशी) के दिन -

❁ प्रोषध, या

❁ उपवास, या

❁ प्रोषधोपवास करना

प्रोषध = एक भुक्ति / एकासन

उपवास = ४ प्रकार के आहार का त्याग

प्रोषधोपवास = पर्व के एक दिन पहले व बाद में प्रोषध व पर्व के दिन उपवास

अनुपवास = एक बार गर्म जल लेना

# क्या त्यागें ?

- ❁ चार प्रकार का  
आहार
- ❁ पाप
- ❁ कषाय
- ❁ इन्द्रिय विषय
- ❁ शरीर से ममत्व
- ❁ आरंभ

- ❁ व्यापार
- ❁ स्नान
- ❁ श्रृंगार
- ❁ आभूषण (रत्नत्रय  
रूपी आभूषण  
धारें)
- ❁ स्त्री संसर्ग

# क्या करें - विधी

- ❁ वसतिंका, जिन मंदिर, एकांत स्थान, सूना घर, एकांत घर में
- ❁ धर्म्य-ध्यानपूर्वक
- ❁ अति तृष्णा सहित धर्म श्रवण करें व कराए

प्रोषधोपवास किस  
प्रयोजन से न करें ?

❁ मान बढ़ाई  
❁ पुण्य से भोग प्राप्ति की चाह

# प्रोषधोपवास का काल

उत्कृष्ट

१६ प्रहर  
-सप्तमी  
१२ से  
नवमी  
१२

मध्यम

१२ प्रहर  
-सप्तमी  
५ से  
नवमी ७

जघन्य

८ प्रहर  
-अष्टमी  
८ से  
नवमी ८

भोग और उपभोग, नियमकरि ममत निवारै ।

परिग्रहपरिमाण-अणुव्रत में निश्चय की हुई भोगोपभोग  
की वस्तुओं में जीवनपर्यंत के लिए अथवा

किसी निश्चित समय के लिए नियम करना,

सो भोगोपभोगपरिमाण शिक्षाव्रत कहलाता है



# भोगोपभोग परिमाण

✿ प्रयोजनवान इन्द्रिय विषयों में आसक्ति घटाकर  
सीमा बांधना

✿ क्योंकि अब यही हिंसा बची थी

# दो प्रकार के विषय

भोग

जो एक बार भोगा जाए  
जैसे - भोजन

उपभोग

जो बार-बार भोगा जाए  
जैसे - वस्त्र, आभूषण

# त्याग के प्रकार

यम

»जीवन पर्यंत के लिये  
त्याग करना

»जो अपने लिये प्रयोजन  
का न हो,  
परिणाम बिगाड़ने वाला  
हो, दोष सहित हो

नियम

»काल की मर्यादा लेकर  
त्याग करना

»जो पदार्थ अपने लिये  
उपयोगी हो, शुद्ध हो

»काल की मर्यादा जैसे - एक  
घड़ी, मुहूर्त, प्रहर, दिन, रात,  
पक्ष, २ माह, ६ माह आदि

# यम रूप विषय

- ❁ ३ मकार
- ❁ कंदमूल
- ❁ रात्री भोजन
- ❁ अनछुना जल
- ❁ 5 अभक्ष्य
- ❁ माखन
- ❁ बाजार का भोजन
- ❁ नीच संगति
- ❁ मर्यादा के बाहर के भक्ष्य पदार्थ

# नियम रूप विषय

❁ भोजन - कितनी बार,  
कितने अनाज, हरी  
त्याग, रस त्याग

❁ जल - कितनी बार

❁ सौंफ आदि

❁ वाहन

❁ बिस्तर

❁ वस्त्र

❁ स्नान

❁ श्रृंगार

❁ आभूषण

❁ कामसेवन

❁ नृत्य

❁ गीत

# क्या लाभ

- ❁ पाप आस्रव रुकता है
- ❁ इन्द्रिय - मन वश में होते हैं
- ❁ राग मंद होता है
- ❁ व्यवहार शुद्ध होता है
- ❁ परमार्थ उज्ज्वल होता है

# परिग्रह परिमाणानुव्रत और भोगोपभोग परिमाण में अंतर

परिग्रह परिमाणानुव्रत	भोगोपभोग परिमाण
अनुव्रत रूप मूल व्रत	महाव्रत की शिक्षा देने वाला शिक्षा व्रत
मिथ्यात्व का अभाव, शेष का परिमाण जीवनपर्यंत के लिये	भोगोपभोग की सामग्री का समय सीमा के माध्यम से त्याग
अंतरंग कषाय रूप विकारी भावों का त्याग मुख्य	बाह्य परिग्रह का परिमाण मुख्य

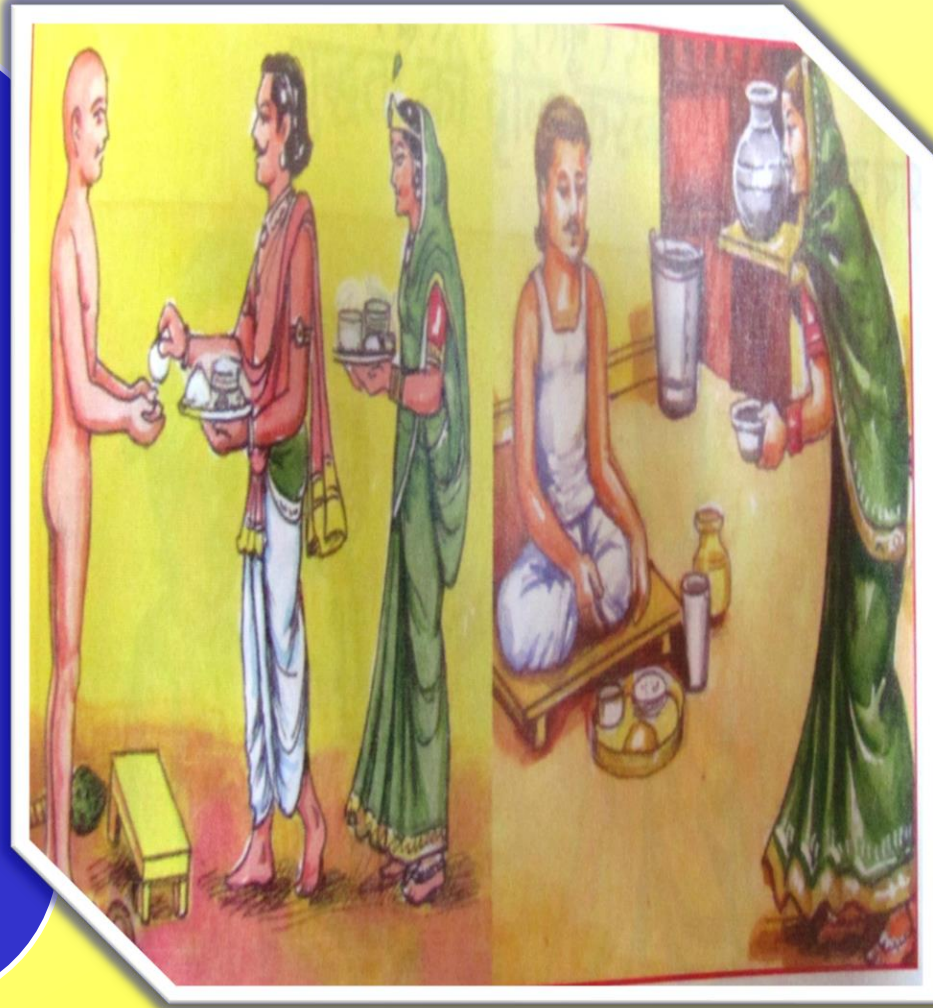
# परिग्रह परिमाणाणुव्रत और भोगोपभोग परिमाण में अंतर

परिग्रह परिमाणाणुव्रत	भोगोपभोग परिमाण
परिमाण बढ़ाया नहीं जा सकता, घटाया जा	मर्यादित समय समाप्त होने पर हीनाधिक किया जा
इसके खण्डन होने पर गुणस्थान बदल जाता है	कुछ काल के लिये नष्ट होने पर भी सावधान होने का अवसर बना रहता है
सभी आचार्य अणुव्रतों में मानते हैं	किन्हीं ने गुणव्रतों में गिना है



मुनि को भोजन देय फेर, निज करहि अहारै ॥१४॥

निर्ग्रंथ मुनि आदि  
सत्पात्रों को आहार देने  
के पश्चात्  
स्वयं भोजन करना  
अतिथिसंविभाग शिक्षाव्रत  
कहलाता है



# अतिथि संविभाग

❁ अ = नहीं

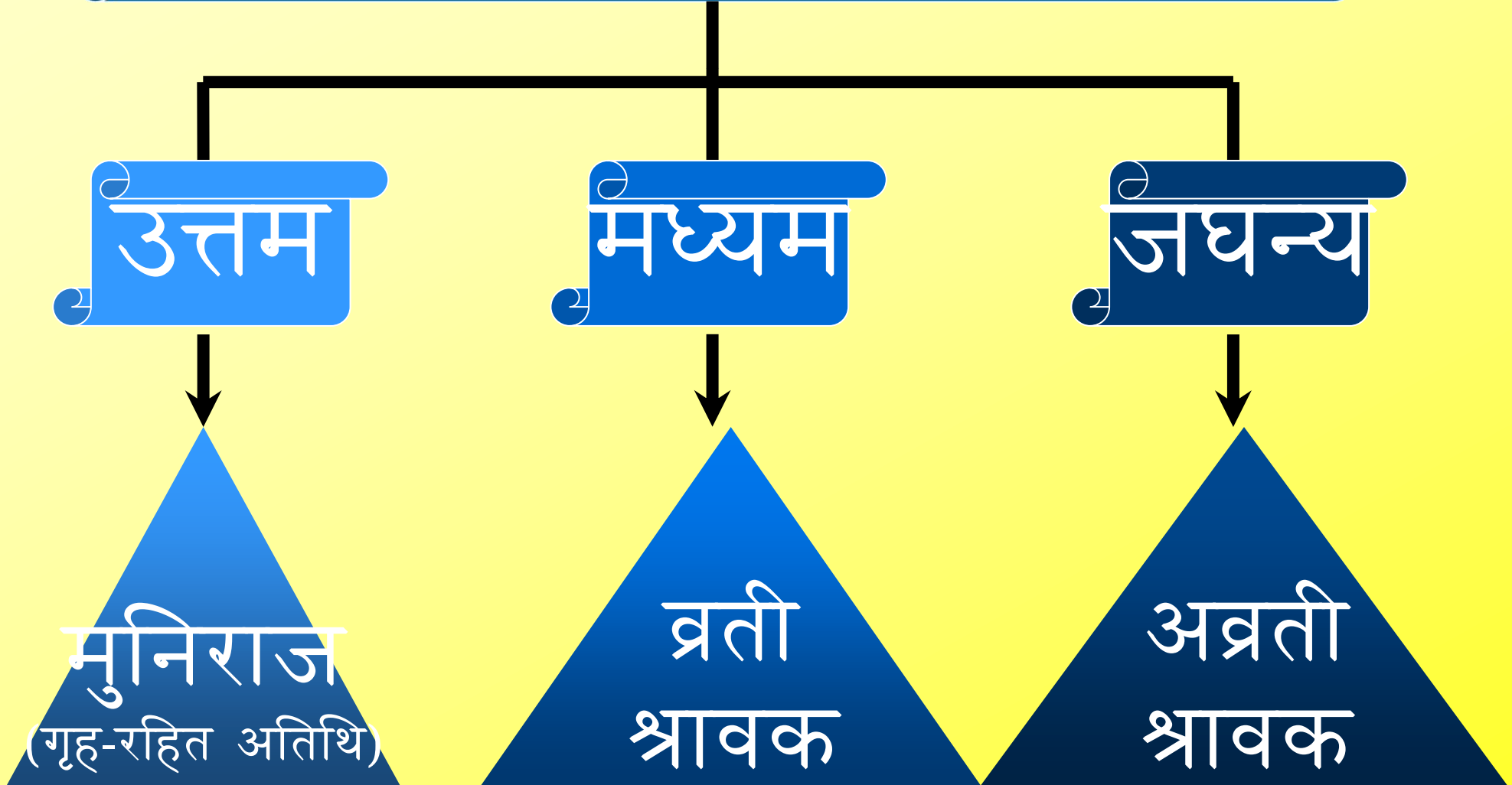
❁ तिथि = तारीख

❁ सं = समान

❁ विभाग = विभाग

❁ जिसके आने की कोई निश्चित तिथि न हो  
ऐसे तीन प्रकार के पात्रों को अपने भोजन में  
से विभाग करके विधीपूर्वक दान देना

# पात्र के प्रकार



# दान का लाभ

❁ जैसे-

❁ जल

❁ शरीर पर लगे

❁ रुधिर रूप

मल को

❁ धो डालता है

❁ वैसे-

❁ दान

❁ गृहस्थी के षट्

कर्माँ से कमाये

❁ पाप रूपी कर्म

मल को

❁ दूर कर शुद्ध

करता है

# ७ शीलव्रत - समीक्षा

दिग्ब्रत

मर्यादित क्षेत्र के बाहर  
समस्त पापों का त्याग

देशव्रत

कुछ काल के लिये और कम सीमा में  
समस्त पापों का त्याग

अनर्थदण्ड  
त्याग व्रत

मर्यादित क्षेत्र में भी अप्रयोजनभूत  
पापों का त्याग

# ७ शीलव्रत - समीक्षा

सामायिक

मर्यादित और अमर्यादित क्षेत्र में कुछ काल के लिये समस्त पापों का त्याग

प्रोषधोपवास

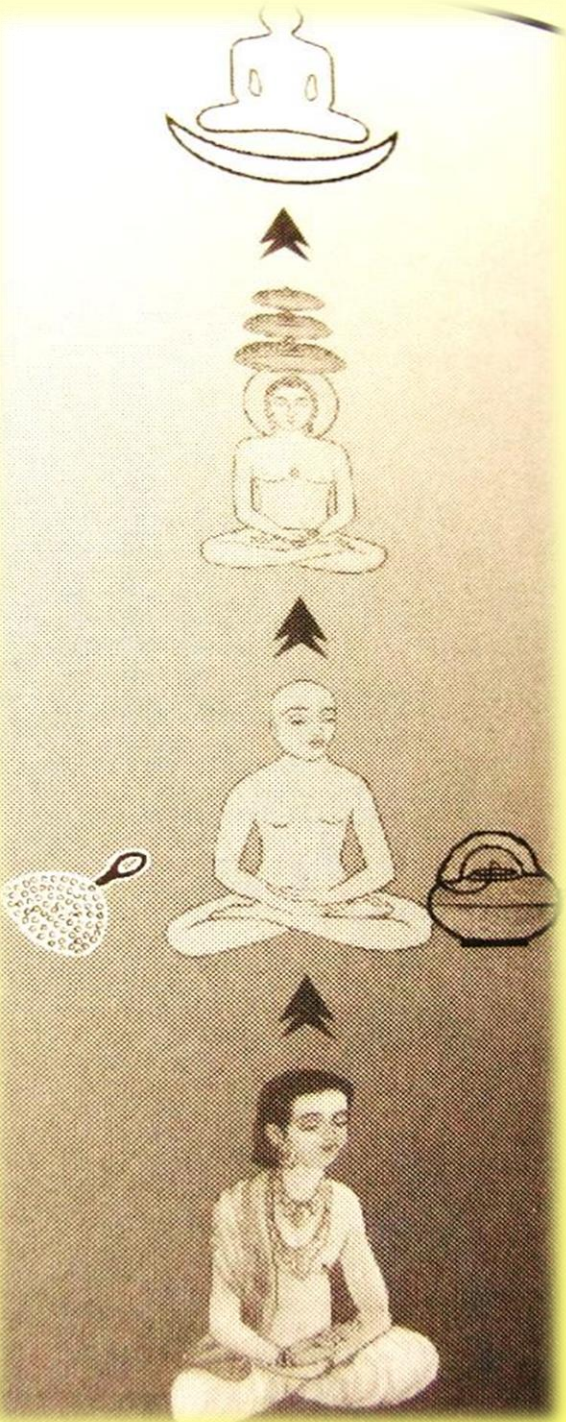
पर्व के सम्पूर्ण दिन समस्त पापों का त्याग

भोगोपभोग  
परिमाण

योग्य पदार्थों में भी राग का त्याग

अतिथि  
संविभाग

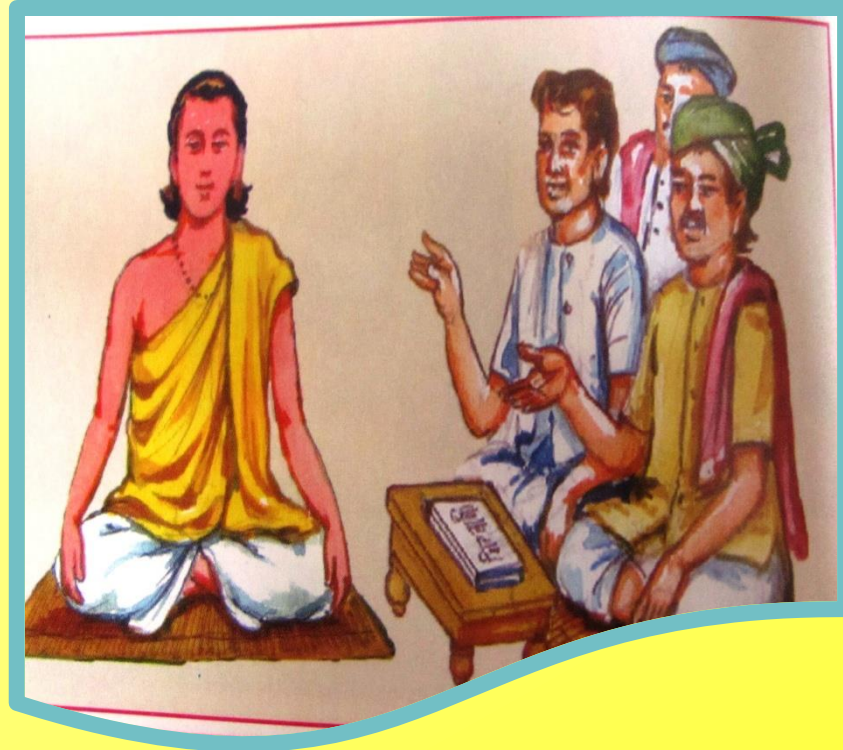
जिसका त्याग नहीं, लोभ घटाकर उसका भी विभाग



# निरतिचार श्रावकव्रत पालन करने का फल

बारह व्रत के अतीचार, पन-पन न लगावै ।  
मरण-समय संन्यास धारि तसु दोष नशावै ॥  
यों श्रावक-व्रत पाल, स्वर्ग सोलह उपजावै ।  
तहँतें चय नरजन्म पाय, मुनि ह्वै शिव जावै ॥१५॥

- » पन-पन = पाँच-पाँच
- » न लगावै = नहीं लगाता और
- » संन्यास = समाधि
- » तसु = उनके
- » नशावै = दूर करता है, वह
- » यों = इसप्रकार
- » उपजावै = उत्पन्न होता है
- » तहँतें = वहाँ से
- » चय = मृत्यु प्राप्त करके
- » नरजन्म = मनुष्यपर्याय
- » ह्वै = होकर
- » शिव = मोक्ष





बारह व्रत के अतीचार, पन-पन न लगावै ।  
मरण-समय संन्यास धारि तसु दोष नशावै ॥  
यों श्रावक-व्रत पाल, स्वर्ग सोलह उपजावै ।  
तहँतें चय नरजन्म पाय, मुनि है शिव जावै ॥१५॥

- ❁ जो जीव श्रावक के ऊपर कहे हुए बारह व्रतों का विधिपूर्वक जीवनपर्यंत पालन करते हुए
- ❁ उनके पाँच-पाँच अतिचारों को भी टालता है और
- ❁ मृत्युकाल में पूर्वोपार्जित दोषों का नाश करने के लिए विधिपूर्वक समाधिमरण (संल्लेखना) धारण करके
- ❁ उसके पाँच अतिचारों को भी दूर करता है, वह आयु पूर्ण होने पर मृत्यु प्राप्त करके सोलहवें स्वर्ग तक उत्पन्न होता है ।
- ❁ फिर देवायु पूर्ण होने पर मनुष्य भव पाकर, मुनिपद धारण करके मोक्ष प्राप्त करता है ।

# श्रावक को मरण के समय क्या करना चाहिये?



सल्लेखना किसे कहते हैं?

सम्यक् प्रकार से  
शरीर और कषायों के  
कृष करने को  
सल्लेखना कहते हैं ।

# सल्लेखना कब धारण की जाती है?

ऐसा दुर्भिक्ष आ जाये,

उपसर्ग आ जाये,

रोग हो जाये,

जिसका कोई प्रतिकार संभव नहीं हो

अथवा वृद्धावस्था आ जाये तब,

धर्म की रक्षा के लिये

शरीर का त्याग करने रूप सल्लेखना धारण की जाती है

१२ व्रतों का पालन करने वाला श्रावक मरकर  
कहाँ उत्पन्न होता है?

१६वें स्वर्ग  
तक उत्पन्न  
होता है

सम्यक्चारित्र की भूमिका में रहनेवाले  
प्रशस्त राग के कारण वह जीव स्वर्ग  
में देवपद प्राप्त करता है ।

धर्म का फल संसार की गति नहीं है,  
किन्तु संवर-निर्जरारूप शुद्धभाव है;  
धर्म की पूर्णता वह मोक्ष है ।

➤ Reference : तत्त्वार्थसूत्र, रत्नकरंड-श्रावकाचार

Presentation developed by  
Smt. Sarika Vikas Chhabra

➤ For updates / feedback / suggestions, please contact

➤ Sarika Jain, [sarikam.j@gmail.com](mailto:sarikam.j@gmail.com)

➤ [www.jainkosh.org](http://www.jainkosh.org)

➤ ☎: 94066-82889